पूर्ववर्ती जयपुर जिले की भौगोलिक पृष्ठ भूमि

*डॉ. पी.एल. गुप्ता

परिचय

जयपुर जिला गुलाबी नगर के नाम से भी जाना जाता है, भारत में राजस्थान राज्य की राजधानी है। आमेर के तौर पर यह जयपुर नाम से प्रसिद्ध प्राचीन रजवाड़े की भी राजधानी रहा है। इस शहर की स्थापना 1726 में आमेर के महाराजा जयसिंह द्वितीय ने की थी। जयपुर अपनी समृद्ध भवन निर्माण–परंपरा, सरस–संस्कृति और ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर तीन ओर से अरावली पर्वतमाला से घिरा हुआ है। जयपुर शहर की पहचान यहाँ के महलों और पुराने घरों में लगे गुलाबी धौलपुरी पत्थरों से होती हैं जो यहाँ के स्थापत्य की खूबी है। 1776 तत्कालीन महाराज सवाई रामसिंह ने इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ प्रिंस ऑफ वेल्स युवराज अल्बर्ट के स्वागत मे पूरे शहर गुलाबी रंग से आच्छादित करवा दिया था। तभी से शहर का नाम गुलाबी नगरी पड़ा है। 2011 की जनगणना के अनुसार जयपुर भारत का दसवां सबसे अधिक जनसंख्या वाला शहर है। राजा जयसिंह द्वितीय के नाम पर ही इस शहर का नाम जयपुर पड़ा। जयपुर भारत के टूरिस्ट सर्किट गोल्डन ट्रायंगल का हिस्सा भी है। इस गोल्डन ट्रायंगल में दिल्ली, आगरा और जयपुर आते हैं भारत के मानचित्र में उनकी स्थिति अर्थात लोकशन को देखने पर यह एक त्रिभुज का आकार लेते है। इस कारण इन्हें भारत का स्वर्णिम त्रिभुज इंडियन गोल्डन ट्रायंगल कहते हैं। भारत की राजधानी दिल्ली से जयपुर की दूरी 280 किलोमीटर हैं। शहरा चारों ओर से दीवारों और परकोटों से घिरा हुआ है, जिसमें प्रवेश के लिए सात दरवाजें है। बाद में एक और दवार भी बना जो 'न्यू गेट' कहलाया। पूरा शहर करीब छह भागों में बँटा है और यह 111 फुट (38 मी.) चौड़ी सड़कों से विभाजित है। पाँच भाग मध्य प्रसाद भाग को पूर्वी, दक्षिणी एवं पश्चिमी ओर से घेरे हुए हैं और छठा भाग एकदम पूर्व में स्थित है। प्रासाद भाग में हवा महल परिसर, व्यवस्थित उद्यान एवं एक छोटी झील हैं। पुराने शहर के उत्तर–पश्चिमी ओर पहाड़ी पर नाहरगढ़ दुर्ग शहर मुकुट के समान दिखता है। इसके अलावा यहां मध्य भाग में ही सवाई जयसिंह द्वारा बनावायी गई वेधशाला, जंतर मंतर, जयपुर भी हैं। जयपुर को आधुनिक शहरी योजनाकारों द्वारा सबसे नियोजित और व्यवस्थित शहरों में से गिना जाता है। देश के सबसे प्रतिभाशाली वास्तुकारों में इस शहर के वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य का नाम सम्मान से लिया जाता है। ब्रिटिश शासन के दौरान इस पर कछवाहा समुदाय के राजपूत शासकों का शासन था। 12वीं सदी में इस शहर का विस्तार शुरू हुआ तब इसकी जनसंख्या 1,60,000 थी जो अब बढ़ कर 2001 के आंकड़ों के अनुसार 23,38,319 और 2012 के बाद 34 लाख हो चुकी है। यहाँ के मुख्य

उद्योगों में धातु, संगमरमर, वस्त्र छपाई, हस्त–कला, रत्न व आभूषण का आयात–निर्यात तथा पर्यटन–उद्योग आदि शामिल हैं। जयपुर को भारत का पेरिस भी कहा जाता है। इस शहर के वस्तु के बारे में कहा जाता हैं कि शहर को सूत से नाप लीजिये, नाप–जोख में एक बाल के बराबर भी फर्क नहीं मिलेगा।

जयपुर की सीमाऐं

जयपुर राज्य के उत्तर में बीकानेर, लोहारू व पटियाला राज्य, पूर्व में भरतपुर, अलवर, करौली, धौलपुर व ग्वालियार राज्य, दक्षिण में कोटा, बूंदी, टोंक व उदयपुर राज्य, तथा पश्चिम में मेवाड़, किशनगढ़, जोधपुर व बीकानेर राज्य है। यह राज्य दक्षिण पूर्व में अधिक विस्तृत, बीच में बिल्कुल संकुचित और उत्तरी भाग के बीच के भाग से कुछ अधिक चौड़ा है। इसकी अधिकतम लम्बाई पूर्व से पश्चिम तक 140 मील और चौड़ाई 196 मील हैं, कुल क्षेत्रफल, जैसा कि पहले बताया जा चुका है, 15,601 वर्गमील है। यह राज्य सवाई जयसिंह के समय में दिल्ली तक फैला हुआ था लेकिन उसकी मृत्यु (ई. सन् 1743) के बाद शनैः शनैः कामा, दबोई व पहाड़ी भरतपुर राज्य मे तथा थानागाजी, उजीबगढ़, बहरोड़, मंजपुर, प्रतापगढ़ आदि अलवर राज्य ने, नारनोल, कांति आदि झझर राज्य ने फरीदाबाद वल्लभगढ़ राज्य ने टोंक व रामपुरा टोंक राज्य ने अंग्रेजों ने होडल, पलवल को अपने अन्तर्गत मिला लिया।

भौगोलिक पृष्ठ भूमि में उच्चावच, अपवाह तंत्र, मिट्टियाँ, जलवायु एव जनसंख्या की विवेचना की गई है।

उच्चावच :–

इस जिले को 381 मीटर 1250 फीट की समोच्य रेखा दो भागों में विभाजित करती है मानचित्र 2:1। दक्षिण भाग में लालसोट तहसील के अतिरिक्त शेष भाग लगभग समतल है। दक्षिणी–पूर्वी भाग में टोड़ाभीम श्रृंखला तथा कुछ अन्य पहाडियाँ फैली हुई हैं। जिले के उत्तरी–पूर्वी और दक्षिणी–पूर्वी भाग सबसे नीचे भू–भाग है। 1 पश्चिमी भाग 381 से 533 मीटर की 1250 से 1750 फीट ऊँचाई का है मानचित्र 2:1। शेष उत्तरी भाग में 450 मीटर से अधिक ऊँचाई की अनेक पहाड़ी श्रृँखलाएं फैली हुई हैं, जिनकी दिशा दक्षिण से उत्तरी–पूर्वी की ओर है मानचित्र संख्या 2:1।

जयपुर जिले के "लैण्डसेट मोजेक" का अवलोकन करने से अवगत होता है कि इस जिले में निम्नलिखित पहाड़ी श्रृँखलाएँ फैली हुई हैः–

1. **नाहरगढ़ पहाड़ी श्रृँखला** – यह पहाडी श्रृँखला झालाना से विराटनगर तहसील के अमरसर तक फैली हुई है, जिसमें झालाना, अम्बागढ़, सामोद, नाहर और बान्दोली पहाड़ियाँ सम्मिलित है।
2. **विशनगढ पहाडी श्रृँखला –** विशनगढ़ पहाड़ी श्रृँखला विराटनगर के माधोपुर गांव से कोटपुतली तहसील के बनेटी गांव तक फैल हुई है, जिसमें खेड़ली, ऑतेला, बनेटी, देवीपुरा, बेलपुरा, और छतरपुरा पहाड़ी श्रृँखलाएँ सम्मिलित है।
3. बनेड़ा पहाड़ी श्रृँखला – यह बस्सी तहसील के बनेड़ा गांव के समीप प्रारम्भ होकर विराटनगर तहसली के तालु गांव तक फैली हुई है, जिसमें पाच्छाड़ाला खानरायपुर, खान मेरखड़ी, खार राहोडी, बामनवाटी और मानोह पहाड़ी श्रृँखलाएँ सम्मिलित है।
4. लालसोट – टोड़ा भीम पहाड़ी श्रृँखला – इसमें टोड़ाभीम और मोरेन पहाड़ियाँ सम्मिलित है।

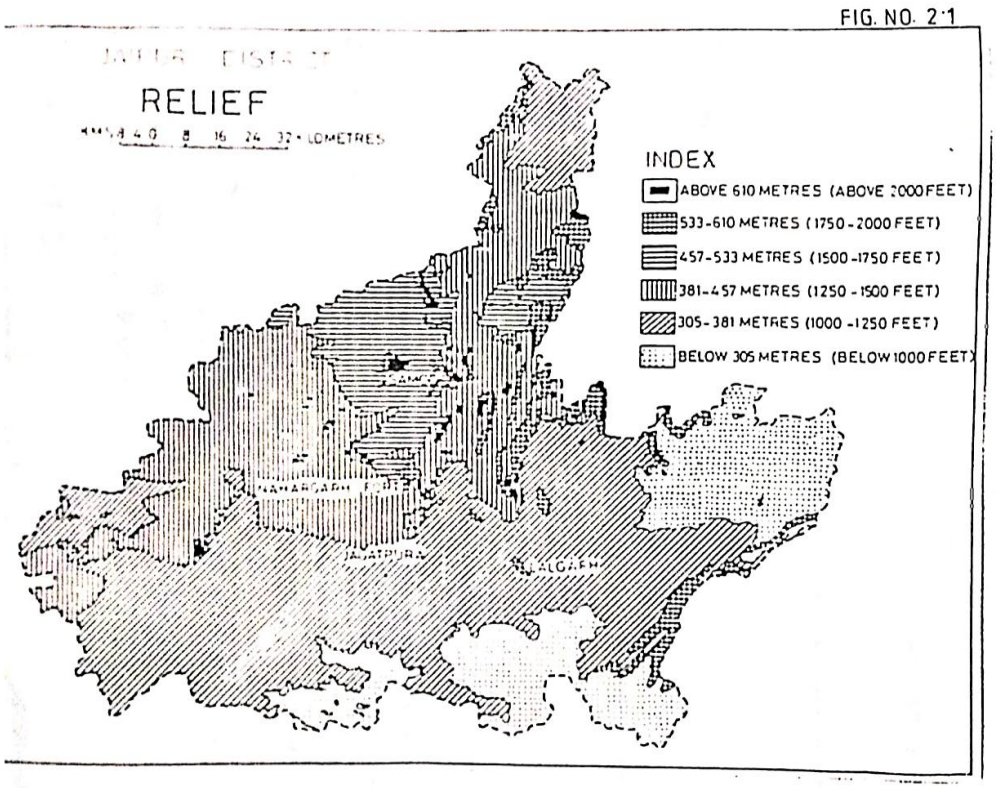

अपवाह तन्त्र :–

इस जिले मे होकर कोई बड़ी नदी प्रवाहित नहीं होती है, लेकिन कई छोटी–छोटी मौसमिक नदियाँ प्रवाहित होती है। इस जिले की मुख्य नदियों में बाणगंगा, माशी, बाण्ड़ी, साबी, मेन्दा और सोटा आदि है, इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैः–

मोरेल नदीः–

मोरेल नदी का उद्‌गम इसी जिले की दौसा तहसील के पाटम गांव के समीप है। यह नदी उत्तर से दक्षिण की ओर दौसा तहसील के दक्षिणी भाग में प्रवाहित होती है। इस नदी के दाहिनी किनारे पर सिर्फ दो ही नाले आकर मिलते है, जबकि बायें किनारे से लगभग आधा दर्जन नाले आकर मिलते है मानचित्र संख्या 2:2। इस वजह से नदी के बायें तरफ अवनालिका अपरदन देखने को मिलता है। इस नदी पर जयपुर व सवाई माधोपुर जिलों की सीमा पर मोरेल बांध निर्मित है, जिससे अधिकांश सिंचाई सवाईमाधोपुर जिले में ही की जाती है। मोरेल नदी का प्रवाहित क्षेत्र दौसा के दक्षिणी भाग में बस्सी के पूर्वी भाग में तथा लालसोट तहसील में है।

बाण गंगा :–

बाण गंगा नदी विराटनगर तहसील के पहाड़ियों से निकलती है। नदी जमवारामगढ़ तक उत्तर से दक्षिण की तरफ प्रवाहित होती है। इस नदी पर जमवारामगढ़ के समीप

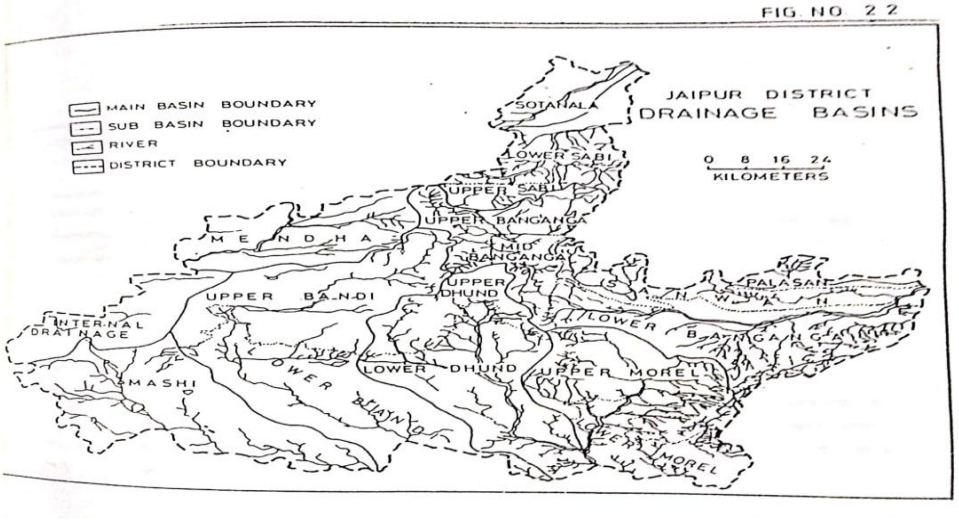

एक बांध निर्मित है, जो जयपुर शहर में पेयजल आपूर्ति का एक मुख्य स्त्रोत है। जयपुर शहर के चार दीवारी के भीतरी भाग के अधिकांश क्षेत्र में इस बांध से ही पेयजल पूर्ति की जाती है। इस बांध के उपरान्त इस नदी की प्रवाह दिशा परिवर्तित हो जाती है। बांध के उपरान्त यह नदी पहाड़ियों की संकडी घाटी में होकर पूर्वी दिशा में प्रवाहित होती है। इस नदी के दक्षिण में लगभग तीन नाले आकर मिलते है। यह नदी इस जिले के पूर्वी भाग में उत्तर–पूर्व से पूर्व की तरह बहती हुई जिले के बाहर निकल जाती है मानचित्र संख्या 2:2। इस नदी के समानान्तर उत्तरी भाग में दो छोटी–छोटी नदियाँ सानवान व पालासन है। इन दोनों छोटी नदियों का उद्‌गम स्थल अलवर का पहाड़ी क्षेत्र है। बाण गंगा नदी जमवारामगढ़ दौसा, बसवा व सिकराय तहसील में प्रवाहित होती हैं।

बाण्डी नदी :–

यह जयपुर जिले की दूसरी महत्वपूर्ण नदी है। यह नदी चोंमू तहसील की सामोद की पहाड़ियों से निकलती है, तथा टोंक जिले मे प्रवेश से पूर्व आमेर, फूलेरा, जयपुर, सांगानेर और फागी तहसीलों में प्रवाहित होती है। इस नदी पर अनेक बांध बने हुए हैं, जिनमे कालख सागर, डिगोनिंया सागर मुख्य है। कालख सागर तक इस नदी की प्रवाह दिशा उत्तर–पश्चिम की तरह रहती है। इस बांध के उपरान्त इस नदी की प्रवाह दिशा दक्षिण पूर्व की ओर हो जाती है। इस नदी के दाहिने किनारे पर केवल एक नाला आकर मिलता है, तथा बायें किनारे पर चार नाले आकर मिलते है।

माशी नदी :–

माशी नदी बनास की सहायक नदी है, जो अजमेर जिले से निकलती है। यह नदी ढूढ और फागी तहसीलों मे

प्रवाहित होती है। माशी नदी पर हनुमान सागर, छापरवाड़ा व नवासागर मौजमाबाद बांध बने हुऐ है, जिससे इस जिले में सिंचाई की जाती है।

साबी नदी :–

साबी नदी सीकर जिले के नीमकाथाना तहसील से निकलती है, तथा विराटनगर तथा कोटपुतली तहसील में प्रवाहित होने के बाद अलवर जिले में प्रवेश कर जाती है।

मेन्दा नदी :–

मेन्दा नदी सीकर जिले की दांता–रामगढ़ तहसील से निकल कर जयपुर जिले की आमेर, फुलेरा तहसील में प्रवाहित होती हुई नमक की झील मे जाकर गिर जाती है।

सोटा नदी :–

सोटा नदी भी सीकर जिले के दाता–रामगढ़ तहसील से निकल कर जयपुर जिले की कोटपुतली तहसील मे प्रवेश करती है, तथा कोटपुतली तहसील मे प्रवाहित होने के उपरान्त अलवर जिले मे प्रवेश कर साबी नदी मे मिल जाती है।

ढूण्ड नदी :–

ढूण्ड नदी इसी जिले की जमवारामगढ़ तहसील से निकलती है। इस नदी की प्रवाह दिशा उत्तर से दक्षिण पूर्व की ओर है। मोरेल नदी की एक सहायक नदी है, जो बस्सी तहसील के पश्चिमी भाग व चाकसू के मध्य भाग मे बहती हुई लालसोट की सीमा पर मोरेल नदी मे मिल जाती है।

मिट्टी :–

मृदा भू–पृष्ठ पर असंपीडित पदार्थ की एक परत है, जिसका निर्माण चट्टानों तथा जैव पदार्थो से क्षय तथा विघटन कारकों द्वारा हुआ है। मिट्टी विशेषता, गहराई, गठन, रंग, मिट्टी में कंकड़ों की उपलब्धता और पानी रिसाव के आधार पर इस जिले की मिट्टियों को सात श्रेणियों में विभाजित संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :–

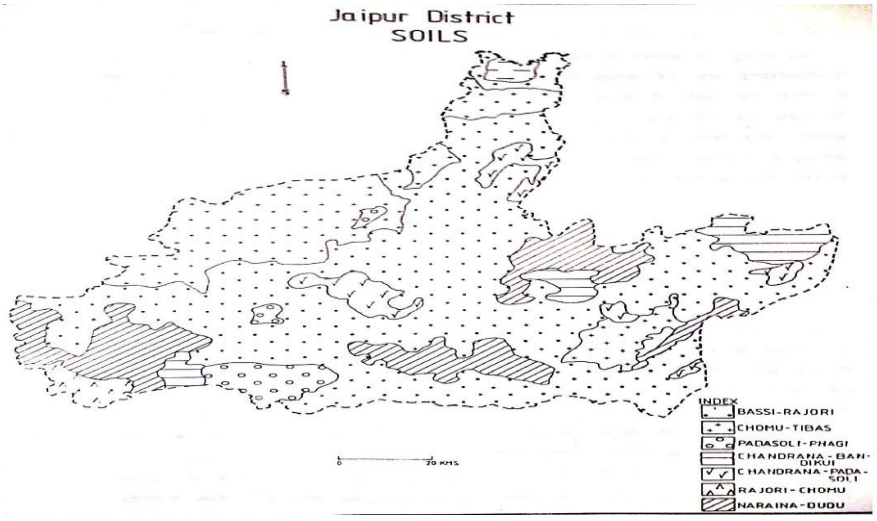

चौमू मिट्टी समूह :–

यह मिट्टी समूह जिले के उत्तरी–पश्चिमी भाग में पाया जाता है। पुरानी मिट्टियों के ऊपर हाल ही का बालू जमाव हर जगह देखने को मिलता है। इस उत्तरी–पश्चिमी भाग में निश्चित ऊँचाई के स्थायी बालू टिब्बे देखने को मिलते हैं, जिन पर खरीफ में बाजरा, मूंगफली, मौठ, और मूंग की फसल पैदा की जाती है। इस समूह की मिट्टियाँ बहुत गहरी, मुख्य रूप से मोटे गठन, हल्की भूरी से गहरी भूरी, उत्तम जल प्रवाह से अत्यधिक प्रवाह, कंकड़ों से रहित और लवण रहित, समतल से मध्यम ढ़ाल वाली भूमि पर कठोर परत की अनुपलब्धता होती है। इन मिट्टियों का वायु अपरवन काफी अधिक होता है।

इन मिट्टियों में कम उर्वरता, कम पानी रोकने की क्षमता, और अधिक मिट्टी अपरदन की समस्याएं हैं। इन मिट्टियों पर उत्पादन की जाने वाली बाजरा खरीफ की दालें प्रमुख हैं, लेकिन सिंचाई द्वारा अन्य फसलें भी उत्पादित की जा सकती हैं।

बस्सी राजोरी मिट्टी समूह :–

यह मिट्टी समूह मुख्य रूप से जिले के मध्यवर्ती तथा दक्षिणी भाग में पाया जाता है, हालांकि इस मिट्टी समूह के छितरे छोटे–छोटे शेष पूरे जिले में मिलते है मानचित्र संख्या 2:3। इस समूह की मिट्टियाँ गहरी से बहुत गहरी, मुख्य रूप से मध्यम गठन बलुई, दुमट से दुमट, पीली, भूरी से गहरी पीली, भूरी, उत्तम जल प्रवाह, कंकड़ों से रहित, लवण रहित, और मध्यम अपरवित मिट्टियाँ हैं। इस समूह में बस्सी श्रेणी मिट्टियों की प्रधानता हैं, और इस समूह की लगभग 90 प्रतिशत क्षेत्र में बस्सी की मिट्टियाँ ही पायी जाती हैं। कम उर्वरता, मामूली से मध्यम अपरवन और सिंचाई के पानी की कम उपलब्धता इन मिट्टियों की मुख्य समस्याएं हैं।

नरेना–दूदू मिट्टी समूह : –

यह मिट्टी समूह जिले के पश्चिम और दक्षिण–पश्चिम भाग में पाया जाता है। नरेना श्रेणी की मिट्टियाँ बहुत गहरी, मुख्य रूप से मध्यम गठन बलुई दुमट्ट से दुमट्ट स्लेटी से गहरी स्लेटी भूरी, निम्न से मध्यम जल प्रवाह वाली, अधिक कंकड़ों वाली और मध्यम अपरवित है, जबकि दूदू श्रेणी की मिट्टियाँ गहराई से मध्यम गहराई की मुख्यतः गठन बलुई दुमट्ट से दुमट्ट गहरी, भूरी से गहरी पीली भूरी अत्यधिक कंकरीली, मध्यम से अत्यधिक लवणीय और मध्यम से अधिक अपरवित है।

गहराई, अपरदन, लवणीय, क्षारीय, इन मिट्टियों की मुख्य बाधांए हैं। इनमें लम्बी जड़ों वाली फसले नहीं लगाए जाने चाहिए। मिट्टी अपरदन की तरीके जेसे समतलीकरण, समुच्च रेखीय बन्धी, पट्टीनुमा कृषि और मिट्टी को आच्छादित करने वाली फसलें इत्यादि बोई जानी चाहिए, जिससे मिट्टी अपरदन को रोका जा सके। लवणीय और क्षारीय मिट्टियों को सुधारने के तरीके उपयोग में लिए जाने चाहिए।

राजोरी – चाकसू मिट्टी समूह :–

यह मिट्टियाँ जिले के दक्षिणी भागों में मिलती हैं। यह मिट्टियाँ अधिक गहरी, मुख्यतः मध्यम गठन बलुई दुमट्ट से दुमट्ट पीली भूरी से लाल भूरी और हल्की लाल, अच्छे जल प्रवाह से अधिक जल प्रवाह, कंकड़ों रहित और हल्की से मध्यम अपरदित है। जैविक खाद और उर्वरकों तथा विशिष्ट व्यवस्था से मिट्टी उर्वरता में सुधार के तरीके अपनाने चाहिए।

चन्दराना–पडासोली मिट्टी समूह :–

यह मिट्टियाँ इस जिले के पूर्वी भाग में पायी जाती है मानचित्र संख्या 2:3। यह मिट्टियाँ मध्यम गहरी से अधिक गहरी, अधिकांशतः बारीक गठन चीका दोमट से चीका भूरी से गहरी स्लेटी भूरी निम्न कोटी का जल प्रवाह से

मध्यम जल प्रवाह, कंकर रहित से कंकरीली तथा मामूली से मध्यम अपरदित है। इन मिट्टियों में 40 से 105 सेन्टीमीटर की गहराई पर कंकरीले पदार्थ पाए जाते हैं, जिन पर पडासोली क्रम की मिट्टियाँ पायी जाती है। इन मिट्टियों की मुख्य समस्याओं में छितरे क्षेत्रों में मिट्टी की कम गहराई, निम्न कोटी का जल प्रवाह हल्की से मध्यम लवणीय–क्षारीय तथा मध्यम अपरदन है।

चन्दराना–बांदीकुई मिट्टी समूह :–

यह मिट्टी समूह भी इस जिले के पूर्वी भागों में पाया जाता है। यह मिट्टियाँ अधिक गहरी, अधिकांशतः महीन गठन चीका दुमट्ट से चीका, पीली भूरी से गहरी स्लेटी भूरी, निम्न श्रेणी के जल प्रवाह से मध्यम प्रकार का जल प्रवाह, कंकड रहित, मामूली से मध्यम अपरदन है। इन मिट्टियों की समस्याओं में इन मिट्टियों को आसानी से काम में न ले सकना, छितरे क्षेत्रों में लवणीय व क्षारीयता की समस्या मध्यम अपरदित और सिंचाई के लिए जल की अनुपलब्धता है। लवणों को जड़ों से नीचे रखने के लिए आवश्यक तरीके अपनाए जाने चाहिए।

पडासोली फागी मिट्टी समूह :–

यह मिट्टियाँ इस जिले के दक्षिणी भाग में पायी जाती है मानचित्र संख्या 2:3। यह मिट्टियाँ मध्यम गहरी से अधिक गहरी, मुख्यतः महीन गठन से चीका दुमट्ट से चीका, गहरी भूरी से गहरी जैतुनी, स्लेटी, निम्न श्रेणी के जल प्रवाह से मध्यम जल प्रवाह, कंकर रहित से कंकरीली तथा मामूली से मध्यम अपरदित मिट्टियाँ हैं, जो समतल से सामान्य ढ़ाल वाली पायी जाती है। इन मिट्टियों की मुख्य बाधाओं में मामूली से मध्यम लवणीय क्षारीय सिंचाई के जल की निम्न किस्म और अनुपलब्धता और अपरदन है।

इन मिट्टियों की समस्याओं में इन मिट्टियों को आसानी से काम में न ले सकना, छितरे क्षेत्रों में लवणीय व क्षारीयता की समस्या, मध्यम अपरदित और सिंचाई के लिए जल की अनुपलब्धता है। लवणों को जड़ों से नीचे रखने के लिए आवश्यक तरीके अपनाए जाने चाहिए।

जलवायु :–

जलवायु मौसमी दशाओं के लम्बी अवधि के औसत का अध्ययन है, किसी भी क्षेत्र के कृषि विकास पर वहां की जलवायु दशाओं का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। यह जिला अर्द्धशुष्कीय जलवायु प्रदेश के अन्तर्गत आता है। जलवायु के मुख्य तत्वों में तापमान, वर्षा, सापेक्षिक आर्द्रता, हवाओं की गति व दिशा व धूल भरी आँधियों की संख्या आदि है। इस जिले में इनकी औसत दशाओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

तापमान :–

जयपुर जिले में भारतीय मौसम विभाग का कार्यालय सांगानेर कस्बे में स्थित हैं, इस कार्यालय से प्राप्त औसत आंकड़े ही जयपुर जिले की जलवायु दशाओं को दर्शाते हैं। तालिका संख्या 2:1 में प्रत्येक महीने की औसत वर्षा, औसत तापमान, सापेक्षिक आर्द्रता, प्रतिघण्टा वायु गति तथा धूल भरी आँधियों के बारें में जानकारी दी गई है।

तालिका संख्या 2:1 से स्पष्ट है कि इस जिले में जून के महिने में तापमान 48° सेंल्सियस तक पहुंच जाता है, जो वर्ष का सर्वाधिक होता है। इस महिने मे गर्म हवाएँ चलती हैं, जिसे स्थानीय भाषा में ''लू'' कहते हैं और इसी महिने में धूलभरी आँधियाँ सर्वाधिक चलती हैं। तालिका 2:1 से स्पष्ट है कि जनवरी से जून तक तापमान निरन्तर बढ़ता जाता है। जून के अन्तिम सप्ताह में वर्षा आरम्भ होने से तापमान में गिरावट आ जाती है। जुलाई से तापमान घटने लग जाता है। वर्ष का न्यूनतम तापमान दिसम्बर माह का रहता है।

तालिका संख्या 2:1

जयपुर जिले में मासिक औसत वर्षा, औसत तापमान, सापेक्षिक आर्द्रता वायुगत व धूलभरी आँधियाँ

माह	औसत वर्षा	औसत तापमान	आपेक्षिक आर्द्रता	धूलभरी आँधियाँ
जनवरी	11.2	15.15	47.5	0.0
फरवरी	9.0	18.05	38.5	0.0
मार्च	5.9	23.20	30.0	0.3
अप्रैल	3.6	28.75	24.0	0.7
मई	9.9	33.2	26.0	1.7
जून	51.3	33.25	40.0	3.0
जुलाई	182.7	29.85	68.5	0.1
अगस्त	180.7	28.1	76.5	0.1
सितम्बर	85.2	28.1	65.5	0.0
अक्टूबर	9.9	25.27	41.5	0.0
नवम्बर	1.9	20.5	39.0	0.1
दिसम्बर	5.71	6.75	45.5	0.0

स्त्रोत – ऑफिस ऑफ दी डिप्टी डारेक्टर जनरल ऑन आब्जेवेटरीज क्लाइमेटोलोजी एण्ड जियोफिजिक्स, पूना।

सापेक्षिक आर्द्रता :–

वर्षा ऋतु में अर्थात् जुलाई से दिसम्बर के दौरान सापेक्षिक आर्द्रता सर्वाधिक रहती है। सर्वाधिक सापेक्षिक आर्द्रता 76.5 प्रतिशत अगस्त माह में रहती हैं, जबकि अप्रैल व मई के महिनों में सापेक्षिक आर्द्रता 24 व 26 प्रतिशत रहती है, जो वर्ष में न्यूनतम है। इन महिनों में गर्मियाँ आरम्भ हो जाती है, जिससे हवा में आर्द्रता काफी कम हो जाती है।

हवाएँ :–

इस जिले में लगभग 5 माह वायु शान्त रहती है। इस जिले में अधिकांशतः हवायें उत्तर–पश्चिम में चलती हैं, तथा दक्षिण से बहुत ही कम हवायें चलती हैं। सबसे तेज गति की हवायें उत्तर की ओर से चलती हैं, जिनकी प्रति घण्टा गति 30 से 40 किलोमीटर होती है। गर्मी के मौसम में हवाएँ दक्षिण, पश्चिम और उत्तर–पश्चिम की ओर चलती हैं। सर्दी के मौसम में हवाओं की दिशा मुख्यतः पश्चिम से उत्तर की ओर चलती हैं।

वर्षा :–

जिले की औसत वार्षिक वर्षा 557 मिलीमीटर है। वर्षा साधारणतया पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर बढ़ती जाती है, लेकिन आमेर क्षेत्र पहाड़ी होने के कारण वर्षा अधिक होती है। पूरे वर्ष की 90 प्रतिशत वर्षा जून से दिसम्बर के

महिने में हो जाती है। सन् 1981 व 83 के अतिरिक्त इस जिले में सामान्य से भी कम वर्षा हुई।

सारांश

शहर चारों ओर से दीवारों और परकोटो से घिरा हुआ है, जिसमें प्रवेश के लिए सात दरवाजें हैं। बाद में एक और द्वार भी बना जो 'न्यू गेट' कहलाया। पूरा शहर करीब छह भागों में बँटा है और यह 111 फुट (38 मी.) चौड़ी सड़कों से विभाजित है। पाँच भाग मध्य प्रसाद भाग को पूर्वी, दक्षिणी एवं पश्चिमी ओर से घेरे हुए हैं और छठा भाग एकदम पूर्व में स्थित है। प्रासाद भाग में हवा महल परिसर, व्यवस्थित उद्यान एवं एक छोटी झील हैं। पुराने शहर के उत्तर–पश्चिमी ओर पहाड़ी पर नाहरगढ़ दुर्ग शहर मुकुट के समान दिखता है। इसके अलावा यहां मध्य भाग में ही सवाई जयसिंह द्वारा बनावायी गई वेधशाला, जंतर मंतर, जयपुर भी हैं।

***सह आचार्य**
भूगोल विभाग
राजकीय महाविद्यालय कालाडेरा,
जयपुर (राज.)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. http://www.census2011.co.in/city.php
2. कपूर आयशा ई–आर्टिकल्स ऑनलाइन पृष्ठ 103
3. उमनि जैविश ई' 'जयपुर मात्रा और मात्रा' पृष्ठ 103
4. उमनि जैविश ई 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फमैशन टेक्नोलॉजी इलाहाबाद पृष्ठ 103
5. भारतीय मौसम विज्ञान विभाग